



प्रतिध्वनि

बलकृष्ण

७००००७

ॐ चिरजीलाल

छायागाछ / चिरजीलाल की बंविताएँ

प्रतिध्वनि के लिए मधु जोशी, ३१, हरिराम गोयनका स्ट्रीट,

कलकत्ता-७०० ००७ द्वारा प्रकाशित / भागचन्द मुराना, मुराना

प्रिन्टिंग वर्क्स, २०५ रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-७०० ००७ द्वारा मुद्रित ।

आवरण विभूतिभूषण दासगुप्त

प्रथम संस्करण १९९२

मूल्य तीस रुपये

CHHAYAGACHH

Poems by CHIRANJILAL

स्वर्गोपा माँ की स्मृति मे  
—बिरजोलाल

आमार

सर्वश्री मनमोहन ठाकौर, बालकृष्ण गर्ग, गीतेश शर्मा एव नयल

—चिरंजीलाल

## अनुक्रम

कवय	१
आदिच्छ और आदिच्छ	१०
कर्म और विद्या	११
मैं क्यों अकेला था ?	१२
मोड़	१३
मन्त्री-मन्त्री काका	१४
हाई-जोमाई/री	१५
रवि-पुत्र	१६
परिचय (१)	१७
परिचय (२)	१८
बैंगन-मोड़	१९
मन्त्र काय	२०
मन्त्रागार	२१
साग के गोष्ठे	२२
साग की कर्मिणी	२३
साग बागान	२४
मदंग	२५
मूगान	२६
साग बागान में	२७
साग मनुमदार	२८
साग्यवाद	२९
भगोमा	३०
कंदी	३१

बैंसे लोग	३२
मगरूर	३३
क्रान्ति	३४
व्यवस्था	३५
भाग्यवाद	३६
हे भगवान	३७
मृगमरीचिकाएँ	३८
महानगर के रास्ते	३९
जेनरेटरो के बीच	४०
सुगरस	४१
इच्छाएँ	४२
हमें क्या ।	४३
घाद	४४
नहीं, ऐसा तो नहीं ?	४५
हम	४६
कुत्ते	४७
ताबेदार	४८
अनुसन्धान	४९
भेड-बकरियाँ	५०
दलाध्यक्ष	५१
अनन्त चक्र	५२
मेरे बेटे	५३
गृह प्रवेश	५४
नव-वर्ष	५५
आक्रोश	५६
और	५७
कयो खोल दिए ?	५८
स्वीट हाट	५९
खडे-खडे	६०
निर्जन	६१
प्रौढ प्रेम	६२
आशका	६३
कुछ करो	६४

· छायागाछ







## आस्तिक और नास्तिक

मृत्यु-भय-ग्रस्त,  
आस्तिक हूँ  
सकट टल जाने पर,  
नास्तिक हूँ । ०

## कर्म और निष्काम

मैं तुम सब का सदिक नहीं—  
त्रिदली क्षत्रिय का मुझे पता न हो ।

चाहे कुरूप बने या सौभाग्य,  
सुखदय ब / या माया-दिन,  
मैं तुम कर्म का कमी नहीं—  
त्रिदले पत्र पर मेरा अधिकार न हो ।

मैं मुक्त चाहता हूँ, दुःख नहीं,  
प्राप्त चाहता हूँ, हानि नहीं,  
उप चाहता हूँ, पराउप नहीं,  
प्रीतिन चाहता हूँ, भृशु नहीं—  
चाहता हूँ स्वावगच्छन, भाग्य-गमपेक्ष नहीं । ०

मैं क्यों अकेला चजूँ ?

मैं इतना अभागा नहीं,  
मेरी आवाज भी इतनी बेअसर नहीं  
कि मेरे बुलाने पर  
कोई मेरे साथ न चले ।

मैं तो चलना चाहता हूँ  
लेकर सारी दुनिया को साथ ।

मैं आया हूँ अबेला,  
जानता हूँ—  
जाऊँगा भी अकेला  
लेकिन चलूँगा नहीं अकेला । ०

## श्लोक

मि मायाया रहा—

भारत में रहने को

इसका नाम है अमृत को,

जहाँ धरे लक्ष्मी में लक्ष्मी को,

सत्यपुत्री धरती काशी में लक्ष्मी को ।

मि हृदया रहा—

बही-बही काशीया में समस्तका

सब से काशी गुण

विद्वानों में रहने ।

मि गंगाया रहा—

दुग्धों के समे में दोहरी

विद्याया धरती कविताओं में प्रेरणा ।

मि कल्या रहा—

उदासी धरे सीता में

उदासी धरने की कोसल ।

और, भव धरती माया—

हा गढ़े है अमर्त्य

और में धन बर रहा गया हूँ—

मिर्त एक समान । ०

## महटी-स्टोरी कल्चर

वर्षों से हो रहा है  
बगल के फ्लैट में  
नारी तन का व्यापार—  
पड़ोसी को पता तक नहीं !

दसवें तल्ले पर रहता  
कितना बड़ा स्मगलर—  
किसी को पता तक नहीं !

हैं नामी-गरामी लोगो के  
बेनामी फ्लैट  
ऐयाशी के अड्डे—  
किसी को पता तक नहीं !

इस बिल्डिंग में जीवित है—  
कितनी असंस्कृत सस्कृति  
और किसी को पता तक नहीं । ०

## हाई-मोमार्टरी

हा हाई-मोमार्टरी में  
बहाबीय बरनी बिप-भुता में  
'देविता' और 'मन्त्रों' को बनाते हैं  
मेरी आँखें लगाए बरनी रहनी हैं कृप।

मोहन-भार में सरी कारियों में,  
रवन में सुन्दर गुह्याकारियों में,  
बुद्ध के गतिमायन मुनो पर,  
मुसली में  
मेरी आँखें लगाए बरनी हैं  
निराल—मोमार्टरी रहनी हैं कृप। ०



## शॉक-प्रूफ

ज़िन्दगी की ऊबड़-खाबड़,  
टूटी-फूटी सड़क पर,  
भटके खाते-खाते,  
मैं अब 'शॉक-प्रूफ' हो गया हूँ ।

घूल और घुएँ भरी हवा,  
अब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाती  
क्षय रोग से ग्रस्त  
सूखी छातिरियाँ,  
अब और खून नहीं निकाल पाती  
राक्षसी गाड़ियाँ ••जाती-जाती,  
मेरी ज़िन्दगी को अब डरा नहीं पाती ।

गद्गदे कीचड़ भरे,  
रास्तों पर चलते चलते  
मैं अब पक्का हो गया हूँ । ०

## परिचय (१)

बन लह बन दुन्दुबरी की  
आल बन बन लह है दुन्दुबरी ।

बन लह  
दुन्दुबरी बनकी  
मिथल में मिथल बनकी की  
लह देली में दुन्दुबरी में  
आल उग दललल  
लह बन है बनल ।

बन लह उगल लह लह  
लहल लह बनलल में  
मललल लहल लह दुन्दुबरी, आललललल में  
लह आल...

बन लह लह में लहल लहल  
आल ललल लहल है ललल लह । ०

## परिवर्तन (२)

पहले मैं देखा करता था  
घाटेड के विज्ञापन  
अब मैं देखा करता हूँ  
प्लेबॉय मैगज़ीन ।

पहले मैं करता था  
डाइरेक्टर का घण्टो इन्तज़ार  
अब लोग तरसते हैं  
भुभुसे मिलने के लिए ।

देखो,  
मैं क्या से क्या हो गया हूँ  
व्यवस्था में परिवर्तन चाहने वालो !  
व्यर्थ शोर मत करो  
वर्ना... ०



## गरम चाय

गरम चाय ।

प्याले में चम्मच की खनक  
भाप से उठती महक ।

भाग जाता अवसाद  
हल्की सी चुस्की  
आती चेहरे पर चमक ।

चाय पर  
हल हो जाते हैं बड़े बड़े मसले  
चाय की खूबी—  
दोस्त बन जाते हैं अनजान लोग  
चाय के प्याले में  
सिमट आता है पूरा जहान । ०



## चाय के पीछे

वहो प्यारे मित्रो !  
कैसे हो,  
कहो, क्या चाहिए तुम्हें ?

तुम तो मुझसे कभी कुछ मांगते नहीं  
कभी शिकायत भी नहीं करते ।

अपनी बढोत्तरी के साथ  
मेरी बढोत्तरी करते ।

सचमे, तुम्ही दोस्त हो मच्चे मेरे  
अच्छा है कि तुम चाय के पीछे हुए  
आदमी नहीं । ०

सगरी में हवा दे  
 मन कुबल जाए सारीको में  
 रंग-विरंग हो  
 फिर भी मत मानें ।

देखत अम्बुदरीया  
 मरके धूल गी ।

सारी दुनियाँ पर रस खालें  
 सारी गी समझनी कविदाँ !  
 सोने गी समझनी कविदाँ ! ।



## चाय बागान

सुनहरी सुबह, सिल्वरी शाम  
हर क्षण रंग बदलता आसमान ।

रंग-बिरंगी चिड़ियाँ  
गुलमोहर की बतार  
स्वागत करते देवदार  
चाय के पौधों की रक्षा करते छायागाछ ।

पर्वतों पर झूलते बादल,  
बोगनबेलिया,  
उपजती चाय ।

रंगभूमि, तपोभूमि,  
स्वर्गाश्रम है हमारा चाय बागान । ०



## तूफान

हिला घाय बागान  
भयबर या तूफान ।

डरायनी सीटियाँ—  
मानो बजा रहा या शैतान ।  
फट पड़ा या आगमान ।

पेढ धराशायी  
टूटी वृक्षों की डालियाँ  
घरों की टीनें उठी  
झोपड़ियाँ गिरी  
टूटे खिड़कियों के शीशे  
घरों के भीतर भरता रहा  
वर्षा का पानी ।

घनघोर अँधेरा  
मानो प्रलय !

क्या कुछ भी नहीं रहेगा शेष ?

तूफानी रात  
पौधे एक दूसरे से गुँथे ।

हुई सुबह  
कुछ पौधों ने खाली आँखें  
जीत गया जीवन  
बीत गया तूफान  
फिर से खुला नीला आसमान । •

## प्राय कामास में

अरे होकर ! अरे बहादुर !  
जारी जारी काम कर ।  
अरी मोदरी अरी बिष्णुदास !  
टिठा टिठा काम कर ।

आने वाली है राजा की मकारी ।  
मउरे भर, मउर बनो, बनाइयो पउरे ।  
पौटा मा, पामर मा, रामर दाप  
मम कसकर कर ।

जारी जारी काम कर,  
बम काम कर और काम कर ।  
जी भर कर होइया पी,  
ओमर देम बमा ।

आने वाली है राजा की मकारी  
आने वाला है भोट देने का देम  
जो काम बिन्दे गाहे पार पय में नहीं हुआ—  
मर करना होगा—इसी दर मरीनो मे । •

## चार मजुमदार

तुम मानवीय ज्वालामुखी,  
स्वतंत्र भारत के महान प्रातिमारी !

तुमने जगाया—  
वृषको को,  
युवको को,  
बुद्धिजीवियों को,  
और  
सर्वहारा को ।

तुमने भ्रवभोर कर रख दिया,  
एक सुदृढ़ सरकार को ।

तुम पगलाभोरा की तरह प्रलयकारी  
वृक्षवाम !  
किन्तु महाबली,  
चार !  
तुम जीवित हो सम्पूर्ण भारत में,  
असंख्य नर-नारियों के हृदयों में । ०

## गाम्भिर्यवाद

संसारभूत कष्टों से भँट,  
हठम दण करो,  
बस सत्य परिचर्य ही धाम ।

मृमन जानो है बर्षा  
देवारी की नौदा ?  
मरी है बर्षा पुन की उखाड़ा ?  
मरा है काई मुसलमान आध्यात्म बख्त  
दिना उचित बिलियावा के ?  
मरी है बर्षा मुंशीबनियों के हाथों  
मरमान की देवता ?  
ममल मल ही बर्षा  
मरबारी अधिकाशियों द्वारा ?

यदि नहीं,  
तो गुम क्या जानो गाम्भिर्यवाद को ? •

## भरोसा

भरागा था  
मेरा देश बदलेगा ।  
जब परिधान बदला है  
ता परिवेश भी बदलेगा ।

मडका पर  
दुकाना पर  
गलिया मे  
हालात बदलेंगे ।

पर,  
मेरा देश की हालत  
होती जा रही है  
बद स बदतर ।

मेरा देश रहता है  
हमेशा रुग्ण  
टी० बी० कैसर जैसे  
सभी रोगों से ग्रस्त ।

फिर भी  
आश्चर्य ।  
रहता है  
मस्त । ०

ਭੈ ਭੀ

ਮਾਂਝੀ ਮਾਂ ਤੇ

ਕਿਸੀ ਨ ਕਿਸੀ ਕਦਰ ਦੇ ਕਦੇ ।

ਕੁਲ ਜਾ ਕੇਏ ਤੇ ਸਮੇਂ ਦੇ ਕਦਰ ਦੇ

ਕੁਲ ਕੰਧੇ ਤੇ ਆਪਸੀ ਸਾਥਾਪ ਦੇ

ਕੁਲ ਅਪਣੇ ਵਿਚਾਰ ਦੇ

ਆਪਣਾ-ਵਿਚਾਰ ਦੇ

ਕੁਲ ਪਾਕਾਥਾਰ ਦੇ

ਕੁਲ ਪਰਿਥਾਰ ਕਰਕਾਰ ਦੇ ।

ਕਦੀ ਤੇ ਸਮਾਂ

ਸਮਾਂ ਨੇ ਸੁਰਿਹ ਕੀ ਥਾਪ ਸਾਥਨ ਤੇ ।



## कैसे लोग

न जाने कैसे है  
हमारे लोग !  
भाग में डूबी मस्तिष्क का  
बहुते हैं योग !

पहले भाग  
फिर त्याग ।  
खाते छप्पन भोग  
फिर करते उपवास ।

लाऊड-स्पीकर लगाकर  
करते भगवान का भजन ।  
शक्ति के लिए  
करते शक्ति-भग ! ०



## क्रान्ति

स्पृष्टी क्रांति  
खड़ी है प्रतीक्षा में  
कि कोई तो करे उसका वरण ।

कितनी बार हुआ उसमें  
बलात्कार  
कितनी बार बर्बाद गया  
उसका गर्भपात ।

सम्पट प्रेमी  
जिन्होंने चाही थी मरमली क्रांति  
पलायन कर गये अपनी दुम दबाकर ।

जिन्होंने चाहा था  
उससे सच्चा वरण  
उन्होंने स्वीकार किया  
असमय मरण ।

घुटनों में मुँह छिपाए  
परित्यक्ता शकुन्तला सी  
वह प्रतीक्षा कर रही है  
उस दुष्यन्त की  
जो देर से ही सही  
उसे पहचान तो ले । ०









## महाभारत के पाठ-१

पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री

पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री  
पाठ है श्री

पाठ है  
पाठ है श्री





हमें क्या !

देन बर्तों में दूध लगा

बनने दो, / हमें क्या !

ऊँची चूल्ही की दुई जला दे लगा

दे बने दो, / हमें क्या !

ऊँची बट्ठी का जलकर भाग लगा

भाजने दो, / हमें क्या !

ऊँच जल का जलकर हो लगा,

होने दो, / हमें क्या !

ऊँचे बग़ाहा का बाटावा बिना,

बनने दो, / हमें क्या !

ऊँचे गाँव का चढ़े छे,

चढ़ने दो, / हमें क्या !

ऊँची लाग गेह माह का चढ़े छे,

चढ़ने दो, / हमें क्या !

हमिस्त्रों की भागदिलों में

सगाई आ रही है भाग,

भागने दो, / हमें क्या !

जगह-जगह गेह सगावारा हो चढ़े छे,

होने दो, / हमें क्या !

जब सब हम मुग़लान हैं

हमारे लिए सब टीक-टिक है । •



ਕਹੀ, ਦੇਸਾ ਸੋ ਜਹੀ ਚ

ਕਹੀ, ਦੇਸਾ ਸੋ ਜਹੀ  
ਇ ਸਿਦਕਿ ਦਿਖਾਵੈ ਦਿਨ  
ਜਾ ਕਹੀ ਹੈ ਕੇਹਾ ?

ਜਸ ਜਹੀ ਆਖੇ  
ਕਰਮਾ ਆਖਾ  
ਕਿਨ੍ਹ ਕਰਮੇ ਰਹੇ ?  
ਆਖੀਯਾ ।

ਕਹੀ, ਦੇਸਾ ਸੋ ਜਹੀ  
ਇ ਦੁਸੀ ਆਖੇ ਕੀ  
ਕਨ ਕਹੈ ਹੈ ਹਮਾਰੀ ਆਖ ? •



## ਬੁਲੇ

ਤਲਾਹੀ ਲਈ ਤੇ ਚੜ੍ਹੇ ਘਾਟ ਖੁਦ  
 ਹੀ ਲਾਗਾਇਆ ਹੀ ਲਾਗਦਾਰੀ  
 ਹੀ ਛੇਕਦੇ ਚੜ੍ਹੇ ਘਾਟ ਹੀ ਚਿਕ ਘਾਟ  
 ਤੁਸੀਂ ਜਿਹੇ ਖੁਦ ਛੇਕ ਲਏ ਚੜ੍ਹੇ ਘਾਟ ।

## ਬੁਲੇ

ਲਾਹੀ ਤੇ ਬੁਲਾ ਹੀ ਲਾਹੀ  
 ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ  
 ਬੁਲਾ ਤੇ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ।

ਬੁਲਾ ਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ  
 ਲਾਹੀ ਤੇ ਬੁਲਾ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ।

ਬੁਲਾ ਬੁਲਾ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ  
 ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ਲਾਹੀ ।



## धनुमन्धारा

बैसाखी की गाँव—

“झाड़िया-झाड़िया समुद्र  
गुच्छों की है निगल रहा ।”

बिन्दु छप्पावार का दुर्दोश गायन  
सम्पूर्ण गुच्छों की गा रहा,  
यह बिन्दी की नहीं दिग रहा ! •





## दुःखदण्ड

अधर के भेद पर  
दुःख के अनागत्य का  
भीषे काय की मरती मर  
कुली के पीछे  
महाकुली के धिक् ।

गामने मरे  
हाथ जोड़े  
मरती मे हीनके मरे  
मराबमानों, मरती के मराने । ०

## भेट-वकरियाँ

दा नतिमान दूबे  
जा रही थी  
एक से  
भेट-वकरियाँ  
दूगरी में लटकियाँ ।

गभी जा रही थी बटन के लिए  
भटके से अथवा हलाल होकर । °

## दुखोदपहर

अधनः के चोटें गर  
छूने के अनदिनय पाव  
भोगे बाप की गरह हरह  
बुझी के पीठे  
महाबुद्धों के बिच ।

गामने गरें  
गाम खंडे  
गमों में श्रीगुरुग भरे  
मगवमानों, बगनों के गबानव । ०

अनन्त जग.

माना न, नाहीं नई  
दादा न, दादी नई  
माँ नई, पिता न  
माया न, मायाँ नई ।

ब १ नद बाव रिवाजा  
बहु-बोध ।  
बबबे बट हूँ बटलें आई ।  
बाव-बावी हूँ ।

बब ग बट बल रग अनन्त-बब  
राम और मृगु बा  
मृगु और राम बा ।

राजा मण, रानी गई  
विदेगी मण, स्वदेगी आए  
आए दृष्टिगत मे विदेगी  
लुटन हमे,  
लुट रग है आज भी ।

बिननी भूगिरी बनी  
बिननी टूटी  
बिनने बिन्न मंगे  
बितने हटे ।

बल रहा अनन्त-बब ।

मेरे मेरे

मेरे लगे मेरे ।

मुझे तुम है

तुम जानाकारी है ।

और.....

दर नाल

दर नाली दर नाल और नाल है ।

मेरे लगे मेरे नाल है ।

तुम दर नाल है नाल ?

है नाल ?

दर दर मेरे नाल नाल नाल है ।

नाल नाल है नाल और नाल नाल न

नाल नाल और नाल नाल,

नाल नाल नाल नाल नाल है

नाल नाल नाल नाल नाल है

नाल और नाल..

नाल नाल नाल नाल है ।

मेरे लगे नाल

मुझे नाल है । ०

## शुद्ध प्रवेश

बनत बनत  
जुते-बनत गिरे  
तब गिर गए  
बनी यह अपनी रत्न ।

पाँव धरती पर  
गपना गाजार,  
बना घोगला ।

चिटे ने चिटिया से  
अपनी घर मे  
प्यार किया पहली बार । ०

## मध धर्म

दूध बनें दूध  
दूध दूध आदु का दूध दूध  
[१२ भी दूध दूध है ।

दूध बनें दूध न हुआ दूध,  
उसे दूध करे दूध दूध ।

दूध दूध दूध,  
दूध दूध दूध ।  
दूध-दूध दूध  
दूध-दूध दूध दूध,  
दूध दूध दूध दूध  
दूध दूध दूध दूध ।



## आमोश

मरगा है

आकाश

और

बिनाह मे

त्र-म मे विद्या है

हमारे घर मे

और

अमानव

यह व्याह मे मरगाया गया घर

एक गतिगामी बम-विस्फोट न

उदनेवाला है ।

हम

अपन बच्चा को

गहवान नहीं रहे

ये बच्चे नहीं—

“टादम-बम” है ।

हमारे दरवाजे पर

त्राति गयी है

और हम उसे पहचान नहीं पा रहे । ०

५६ ]

और

और और ।

एक और  
दरदरी,  
पोंट,  
काग,  
गुणद अनुभव ।

और, और ।  
गदा और ।  
अगहीत और ०१ ०

बघों बाल दिए ।

बघों दीने सोन दिए  
सबके लम्बे  
औरत की कलस के  
साथ लगे ?

मिल-मिलकर गढ़-गढ़कर  
उत्सवों की बगिचा में  
बघों दी । उमर दी  
अरों । अरों का बगिचा ?  
बघों दी । बगों की बगों का  
अरों । अरों का बगिचा ?

बागों की, बागों का  
अरों में बगों का  
दीने बगों की बगों  
अरों की बगों की बगों में,  
अरों की बगों की बगों की बगों में ।

बघों, दीने बगों की बगों में,  
बागों की बगों ?  
बघों दीने बगों की बगों की  
अरों के द्वारा  
बागों की बगों ?

बगों ।  
दीने बगों की बगों में बहुत तप बगों  
अरों मुझे दो बगों । ०

## झरोखे काटे

मुझे याद है  
मेरी झरोखे-काटे !  
मेरी आँखें झलके,  
बोझें हलके  
और बाँधनाये होंटे ?

मुझे याद है  
मेरी रातियाँ !  
मुन्नाया मन्नाया  
मेरा गिर मन्नाया  
मुन्नाये श्वेतमय बाल मे ?

मुझे याद है  
मेरी शिथिलता !  
हमारी दुःखानाँ,  
स्वप्न  
और भावनानाँ ?

मुझे याद है  
हमारे पड़ने के दिन  
उत्पन्न आनन्द  
मधुर बुझन  
और विषमभी बागनाले ? •

## खड़े-पड़े

यदि हम चाहें—  
जीवा बाट सकते हैं  
दो पाँवों पर लड़े-गड़े,  
मुग्ध नयनों से देखते,  
आपस में बातें करते ।

यदि हम चाहें—  
देग सकते हैं  
सत्कार का गमस्त मोन्दरं  
और बन सकते हैं  
विश्व में सबसे सुखी । •

## निर्झर

जब निर्झर गति में  
गिराव बिखावे है  
मदमद सोमने है अँधुन  
मेरे हृदय, हाथी बिखावे है  
मैं भी गरी गंगा  
और लोखता है मुझे ।

जब मेरा गहजने है  
एक कदम बदलती है बिजली  
मैं भी अपने पाग धारता है मुझे ।

हरता है—  
कहीं दग निर्झर में  
मेरे प्राण न निबल जाएं ।  
और मैं पुकार उठता है मुझे । •

## मौद प्रेम

उम की सीढ़ियाँ बहने-बहने  
तुम प्रोह हो गई तो क्या हुआ ?  
मैं भी तो अब युवा नहीं रहा ।

तुम्हारी तरह मर भी गिर के बाव  
होता मग है मगदे ।  
मेरी कातभेदी दृष्टि  
आज भी दल रही खगल—  
तुम्हारी पतली बगल  
और माहिनी मूरत ।

तुम्हारे प्रति मरा प्यार  
आज भी है बरबगर  
पागलपन की सीमा तक । ०

## आर्गुबा

हाथों को गहर  
गती है अर्धो निर्दिष्ट  
आर्गुबा और आर्गुबा  
अर्धो गती गते है अर्धो

गुन गाने  
बाँते होने या रहे है दगावने ? •



बुछ करो

बुछ करो ऐगा  
कि, न बड़े दुःखी

बुछ करो ऐगा  
कि, यणे प्रेम-बन्धन

बुछ करो ऐगा  
कि, न हो जगहँगार्द

बुछ करो ऐगा  
कि हम तनावमुक्त हो जाएँ । ०

६४ ]





कलकत्ता महानगर के  
शुद्ध रचनाकारों द्वारा  
प्रतिध्वनि का गठन ।



नये रचनाकारों को  
मंच देने के लिए सकल्पशील ।



प्रतिध्वनि का यह सहयोगी प्रयास ।



प्रथम प्रस्तुति में तीन प्रकाशन

इकेबाना :  
हथेली पर खटित सूर्य :  
विश्वास रच रहा है मुझे :



द्वितीय प्रस्तुति में पाँच प्रकाशन

बिजूका :  
छायागाछ :  
बाहट :  
शब्द यात्रा :  
धारदार :

प्रतिध्वनि

31, सर हरिराम गोयनका स्ट्रीट, क